जो न करे लकीर हाथ की

जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,
इन फकीरो की मौज बदल दे बन्दे की तकदीर,
जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,

जो ज्योतिष विज्ञान करे न वैद भी जिस की हामी भरे न,
वो सब कर दे नजरे फ़कीर
इन फकीरो की मौज बदल दे बन्दे की तकदीर,
जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,

इन फकीरो की खेल निराले,
समज सके न इनको दुनिया वाले,
आँखों में वसी है इनके खुदाई तस्वीर,
इन फकीरो की मौज बदल दे बन्दे की तकदीर,
जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,

जग से जुदा ही इनका विचार है,
रब ही है बंदगी रब ही यार है,
बाँध सके न इनको जंजीर,
इन फकीरो की मौज बदल दे बन्दे की तकदीर,
जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,

परख इनकी कभी न कीजिये,
'मधुप**'** फकीरो का कहा मान लीजिये,
महफ़िल फकीरो की बेनजी
इन फकीरो की मौज बदल दे बन्दे की तकदीर,
जो न करे लकीर हाथ की सोइ करे फ़कीर,

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/14204/title/jo-na-kare-lakeer-hath-ki-soi-kare-fakeer

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |